# नन्दिसूत्रम् वृत्ति सहित और दुर्गापदव्याख्या (फोल्डर नं. ००१४४१)

मुख्य टाइटल
गंधसमप्पणं
ग्रन्थसमर्पण
प्रकाशकीय निवेदन
प्रस्तावना
विषयानुक्रम
वृत्तिकारका मंगल और उपक्रम ----------१
नन्दिशब्दकी व्युत्पत्ति, अर्थ और निक्षेप ---------- १-२
१. गाथा १-३ मंगलसूत्र... ---------- २-५
२. गाथा ४-१७ संघस्तुतिसूत्र... ---------- ५-९
३. गाथा १८-१९ तीर्थकरावलीसूत्र – चौबीस तीर्थंकरोंकी स्तुति ---------- १०
४. गाथा २०-२१ गणधरावलीसूत्र – भगवान् श्री महावीरके ग्यारह गणधरोंकी स्तुति ---------- १०
५. गाथा २२ वीरशासनस्तुतिसूत्र – भगवान् महावीरके शासनकी-प्रवचनकी स्तुति ---------- १०
६. गाथा २३-४३ – स्थविरावलीसूत्र.... ---------- १०-१५
७. गाथा ४४ पर्षत्सूत्र ..... ---------- १५-१७
८. ज्ञानसूत्र..... ---------- १७-२०
९. मत्यादिज्ञानोंका प्रत्यक्ष परोक्ष रूपमें विभागन ---------- २०
१०. प्रत्यज्ञक्षानके इन्द्रियप्रत्यक्ष नोइन्द्रिय प्रत्यक्ष दो भेद ---------- २०
११. इन्द्रियप्रत्यक्षके पांच भेद ---------- २०-२१
१२. नोइन्द्रियप्रत्यक्षके तीन भेद ---------- २१
१३. अवधिज्ञानके दो भेद – क्षायोपशमिक और भवप्रत्ययिक ---------- २१-२२
१४. क्षायोपशमिक तता गुणप्रत्ययिक अवधिज्ञानका स्वरूप ---------- २२
१५. अवधिज्ञानके आनुगामिकादि छ भेद ---------- २२-२३
१६-२२. १, अनुगामिक अवधिज्ञानकादि स्वरूप, उनके अन्तगत..... ---------- २३-२४
२३. २. अनानुगामिक अवधिज्ञान ---------- २४-२५
२४. ३. वर्धमानक अवधिज्ञान गाथा ४५-४६..... ---------- २५-२८
२५. ४. हीयमानक अवधिज्ञान ---------- २९
२६. ५. प्रतिपाति अवधिज्ञान ---------- २९
२७. ६. अप्रतिपाति अवधिज्ञान ---------- २९-३०
२८. द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावसे अवधिज्ञानका स्वरूप ---------- ३०
२९. गाथा ५३-५४ अवधिज्ञानके अभ्यन्तरावधि और बाह्यावधि भेद... ---------- ३०-३१
३०. मनःपर्यवज्ञानका अधिकारी ---------- ३१-३४
३१. मनःपर्यवज्ञानके ऋजुमति विपुलमति दो भेद ---------- ३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३२. द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव आश्री मनःपर्यवज्ञानका स्वरूप ---------- ३४-३६
३३. गाथा ५५ – मनःपर्यवज्ञानका स्वरूप और उपसंहार ---------- ३६-३७
३४. केवलज्ञानके भवस्थकेवलज्ञान और सिद्धकेवलज्ञान दो भेद ---------- ३७
३५-३७. भवस्थकेवलज्ञानके सयोगिभवस्थकेवलज्ञान और..... ---------- ३७-३८
३८-४०. सिद्धकेवलज्ञानके अनन्तरसिद्धकेवलज्ञान और परम्पर..... ---------- ३८-४०
४१. द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव आश्री केवलज्ञानका स्वरूप ---------- ४०
वृत्तिमें-केवलज्ञान-केवलदर्शनविषयक यगपदुपयोग.... ---------- ४०-४३
४२. गाथा ५६-५७ केवलज्ञानका स्वरूप और उपसंहार ---------- ४३-४४
४३. परोक्षज्ञानके आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञान दो भेद ---------- ४४
४४ आभिनिबोधिकज्ञान और श्रुतज्ञानकी सदैव सहभाविता ---------- ४४-४५
४५. मतिज्ञान और मतिअज्ञान तथा श्रुतज्ञान और श्रुतअज्ञान या... ---------- ४५-४६
४६. आभिनिबोधिकज्ञानके श्रुतनिश्रित अश्रुतनिश्रित दो भेद ---------- ४६
४७. अश्रुतनिश्रित आभिनिबोधिकज्ञानके भेद, स्वरूप और उदाहरण.... ---------- ४६-४९
४८. श्रुतनिश्रित मतिज्ञानके अवग्रह ईहा आदि चार भेद ---------- ४९
४९. अवग्रहके अर्थावग्रह व्यञ्जनावग्रह दो भेद ---------- ४९
५०. व्यञ्जनावग्रहके भेद और स्वरूप ---------- ४९-५०
५१. अर्थावग्रहके भेद, स्वरूप और एकार्थिक ---------- ५०
५२. ईहाके भेद, स्वरूप और एकार्थिक ---------- ५०-५१
५३. अपायके भेद, स्वरूप और एकार्थिक ---------- ५१
५४. धारणाके भेद, स्वरूप और एकार्थिक ---------- ५१-५२
५५. अवग्रह आदिका कालप्रमाण ---------- ५२
५६. अवग्रह आदि भेदोंसे २८ प्रकारके मतिज्ञानका स्वरूप... ---------- ५२
५७. प्रतिबोधक दृष्टान्त द्वारा व्यञ्जनावग्रहके स्वरूपका निरूपण ---------- ५२-५३
५८. मल्लक दृष्टान्त द्वारा अवग्रह-ईहा-अपाय-धारणाके स्वरूपका निरूपण ---------- ५३-५५
५९. द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव आश्री आभिनिबोधिक ज्ञानका स्वरूप ---------- ५५-५६
६०. गाथा ७२-७७ आभिनिबोधिक ज्ञानके भेद अर्थ.... ---------- ५६-५८
६१. श्रुतज्ञानके चौदह भेद ---------- ५८-५९
६२-६५. १ अक्षरश्रुतके संज्ञाक्षर, व्यञ्जनाक्षर.... ---------- ५९-६०
६६. गाथा ७८. २. अनक्षरश्रुतका स्वरूप ---------- ६०
६७-७० ३. संज्ञिश्रुतके कालिक्युपदेश, हेतूपदेश.... ---------- ६०-६२
७१. ५ सम्यक्श्रुत-द्वादशाङ्गीके नाम ---------- ६२-६४
७२. ६. मिथ्याश्रुत-भरत, रामायण, हंभी..... ---------- ६४-६५
७३-७५. ७-८. सादि-अनादि श्रुतज्ञान, ९-१०.... ---------- ६५-६७
७६-७७. पर्यवाग्राक्षरका निरूपण और अतिगाढ.... ---------- ६७-६९
७८. ११-१२ गमिक अगमिक श्रुतज्ञान ---------- ६९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७९. १३-१४ अङ्गप्रविष्ट और अङ्गबाह्य श्रुतज्ञान---------- ७०
८०. अङ्गबाह्य श्रुतज्ञानके दो भेद ---------- ७०
८१. आवश्यक श्रुत---------- ७०
८२. आवश्यकव्यतिरिक्तश्रुतके कालिक उत्कालिक दो प्रकार ---------- ७०
८३. उत्कालिकश्रुतके २८ नाम ---------- ७०-७२
८४. कालिकश्रुतके ३१ नाम ---------- ७२-७३
८५. आवश्यकव्यतिरिक्त श्रुतज्ञानका उपसंहार ---------- ७३-७४
८६. अङ्गप्रविष्ट श्रुतज्ञानके १२ नाम---------- ७४
८७. १. आचाराङ्गसूत्रका स्वरूप---------- ७४-७७
८८. २. सूत्रकृताङ्गसूत्रका स्वरूप ---------- ७७-७९
८९. ३. स्थानाङ्गसूत्रका स्वरूप---------- ७९
९०. ४ समवायाङ्गसूत्रका स्वरूप ---------- ७९-८०
९१. ५ व्याख्या(प्रज्ञप्ति)सूत्रका स्वरूप---------- ८०
९२. ६ ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रका स्वरूप---------- ८०-८२
९३. ७ उपासकदशाङ्गसूत्रका स्वरूप ---------- ८२
९४ ८ अन्तकृद्दशाङ्गसूत्रका स्वरूप---------- ८२-८३
९५. ९ अनुत्तरोपपातिकदशाङ्गसूत्रका स्वरूप ---------- ८३-८४
९६. १० प्रश्नव्याकरणदशाङ्गसूत्रका स्वरूप---------- ८४
९७. ११ विपाकदशाङ्गसूत्रके दुःखविपाक सुखविपाक दो प्रकार... ---------- ८४-८५
९८. १२ दृष्टिवादअंगके पाँच भेद---------- ८५
९९-१०७. १ परिकर्मदृष्टिवादके सात प्रकार और भेद---------- ८५-८७
१०८. २ सूत्रदृष्टिवादके २२ प्रकार ---------- ८७
१०९. ३ पूर्वगतदृष्टिवाद-चौदह पूर्व ---------- ८८-८९
११०-११२. ४ अनुयोगदृष्टिवादके मूलप्रथमानुयोग और.....---------- ८९-९२
११३. ५ चूलिकादृष्टिवाद ---------- ९२
११४. दृष्टिवादका परिमाण और विषय ---------- ९२-९३
११५. द्वादशाङ्गीका विषय---------- ९३
११६-११७. द्वादशाङ्गीके विराधकोंको हानि और आराधकोंको लाभ---------- ९३-९४
११८. द्वादशाङ्गीकी शाश्वतिकता ---------- ९४-९५
११९. द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव आश्री श्रुतज्ञानका स्वरूप ---------- ९५
१२०. गाथा ८३ श्रुतज्ञानके चौदह भेद.... ---------- ९५-९७
चन्द्रकुलीन आचार्य श्रीश्रीचन्द्रसूरिप्रणीत नन्दीसूत्रहारिभद्रीवृत्तिकी दुर्गपदव्याख्या----------९९-१६९
चन्द्रकुलीन आचार्य श्रीश्रीचन्द्रसूरिविरचितटीकासहित लघुनन्दी-अनुज्ञानन्दी ---------- १७०-१७८
जोगणंदी ---------- १८०-१८१
नन्दीसूत्रहारिभद्रीवृत्तिके विषमपदपर्याय-विषमपदटिप्पनक---------- १८२-१८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१. प्रथम परिशिष्ट – नन्दीसूत्रान्तर्गत सूत्रगाथाओंकी अकारादिक्रमसे अनुक्रमणिका---------- १८७-१८८
२. द्वितीयो परिशिष्ट – नन्दीहारिभद्रीवृत्ति, दुर्गपदव्याख्या और...---------- १८९-१९४
३. तृतिय परिशिष्ट – न्दीसूत्रमूल, हारिभद्रीवृत्ति, दुर्गपदव्याख्या... ---------- १९५-२०३
४. चतुर्थ परिशिष्ट – नन्दीसूत्रवृत्ति आदिमें स्थित पाठान्तर...----------२०३
५. पञ्चम परिशिष्ट – नन्दीसूत्र, हारिभद्रीवृत्ति, दुर्गपदव्याख्या....---------- २०४-२१६
शुद्धिपत्र---------- २१७-२१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org